छान्दोग्योपनिषद् से एक श्लोक

जिस प्रकार डोर से बँधा हुआ एक पक्षी अनेक दिशाओं में उड़ने के बाद, कहीं और आश्रय न मिलने पर उसी स्थान में आश्रय लेता है जहाँ वह बँधा होता है, उसी प्रकार मन भी अनेक दिशाओं में उड़ने के पश्चात्, अन्यत्र कहीं आश्रय न मिलने पर प्राण में ही आश्रय लेता है, क्योंकि मन प्राण से बँधा होता है।

छान्दोग्योपनिषद् ६.८.२; अंग्रेज़ी भाषान्तर © २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन।

© २०१७ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।